सनमंघ मूल को

सनमंघ मूल को, मैं तो पाव पल छोड़्यो न जाए।
अब छल बल मोहे कहा करे, मोह आद थें दियो उड़ाए।।
दरद जो तेरे दुलहा, कर डायो सब नास।
पर आस ना छोड़े जीव को, करने तुम विलास।।
विरहा न छोड़े जीव को, जीव आस भी पिउ मिलन।
पिया संग इन अंगे करूं, तो मैं सुहागिन।।
लागी लड़ाई आप में, एक बिरहा दूजी आस।
ए भी बिरहा पिउ का, आस भी पिउ विलास।।
मैं कहावत हों सुहागनी, जो विरहा ना देऊं जिउ।
तो पीछे वतन जाए के, क्यों देखाउं मुख पिउ।।
जब आह सूकी अंग में, स्वांस भी छोड़्यो संग।
तब तुम परदा टालके, दियो मोहे अपनो अंग।।
मैं तो अपना दे रही, पर तुम ही राख्यो जिउ।
बल दे आप खड़ी करी, कारज अपने पिउ।।
तुम आए सब आइया, दुख गया सब दूर।
कहे महामती ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर।।